

---

# पश्चात्ताप - 7

---

अव्यक्त बापदादा (20.05.1972) :-

» \_ » हर कर्म करने के पहले मास्टर त्रिकालदर्शी बनकर कर्म नहीं करते हो। अगर मास्टर त्रिकालदर्शी बन हर कर्म, हर संकल्प करो वा वचन बोलो, तो बताओ कब भी कोई कर्म व्यर्थ वा अनर्थ वाला हो सकता है? कर्म करने के समय कर्म के वश हो जाते हो। **त्रिकालदर्शी अर्थात् साक्षीपन की स्थिति में स्थित होकर इन कर्म -इन्द्रियों द्वारा कर्म नहीं करते हो, इसलिए वशीभूत हो जाते हो। वशीभूत होना अर्थात् भूतों का आह्वान करना।**

» \_ » **कर्म करने के बाद पश्चात्ताप होता है। लेकिन उससे क्या हुआ? कर्म की गति वा कर्म का फल तो बन गया ना। तो कर्म और कर्म के फल के बन्धन में फंसने के कारण कर्म-बन्धनी आत्मा अपनी ऊंची स्टेज को पा नहीं सकती है। तो सदैव यह चेक करो कि आये हैं कर्मबन्धनों से मुक्त होने के लिए लेकिन मुक्त होते-होते कर्मबन्धन-युक्त तो नहीं हो जाते हो?**

» \_ » **ज्ञानस्वरूप होने के बाद वा मास्टर नालेजफुल, मास्टर सर्वशक्तिवान होने के बाद अगर कोई ऐसा कर्म जो युक्तियुक्त नहीं है, वह कर लेते हो तो इस कर्म का बन्धन अज्ञान काल के कर्मबन्धन से पदमगुणा ज्यादा है। इस कारण बन्धन-युक्त आत्मा स्वतन्त्र न होने कारण जो चाहे वह नहीं कर पाती। महसूस करते हैं कि यह न होना चाहिए, यह होना चाहिए, यह मिट जाए, खुशी का अनुभव हो जाए, हल्कापन आ जाए, सन्तुष्टता का अनुभव हो जाए, सर्विस सक्सेसफुल हो जाए वा दैवी परिवार के समीप और स्नेही बन जाएं।**

---

➤➤ त्रिकालदर्शी अर्थात्.....

» \_ » साक्षी भाव

→ Detached

■ इस दुनिया की सबसे बड़ी कला है :- “Detach होकर कर्म करना”

→ अभ्यास

- स्वयं को साक्षी होकर देखिये
- दूसरी आत्माओं को साक्षी होकर देखिये
- सम्पूर्ण ड्रामा को साक्षी होकर देखिये
- परमात्मा के पार्ट को साक्षी होकर देखिये
- प्रकृति को साक्षी होकर देखिये
- माया को साक्षी होकर देखिये

[illegible]

→ केवल एक व्यक्ति से नहीं

- सर्व व्यक्तियों से

→ केवल एक समबन्ध से नहीं

- सर्व संबंधो से

→ केवल एक आकर्षण से नहीं

- सर्व आकर्षणों से

⇒            ⇒ निष्काम भाव

→ सेवा की , सहयोग दिया और भूल जाओ

➤➤ स्व परिवर्तन के लिए मुख्य पुरुषार्थ

⇒            ⇒ नव निर्माण

→ नयी आदतों का निर्माण कीजिये

- पुरानी आदतें खुद ब खुद चली जायेंगी

→ प्रकाश को लाइए

- अन्धकार खुद ब खुद चला जाएगा

➡ ➡ ➡ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास

→ स्वमान

- शब्द बदलते रहिये

- भाषा ( हिंदी / ENG ) बदलते रहिये

- चिंतन / मनन कीजिये

- नवीनता / रमणीकता लाइए